कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

रबी की फसलें- समस्या और समाधान

जोनी [1*] और सरोज [2]

[1]एम.एस-सी., डी. डी. सी. डिग्री कॉलेज, धामपुर, बिजनौर

[2]प्रधानाचार्या, रामा पब्लिक जू. हा. स्कूल, नगीना, बिजनौर

***E-mail: jaunithakur1212@gmail.com**

परिचय

इन फसलों को लौटते मानसून और पूर्वोत्तर मानसून के मौसम के दौरान(अक्तूबर) बोया जाता है, जिन्हें रबी या सर्दियों की फसल कहा जाता है इनमें गेहूं, जौ, चना, मटर, मसूर, सरसों, अलसी, और आलू जैसी फसलें शामिल हैं। बीजों के अंकुरण के लिये गर्म जलवायु और फसलों के विकास हेतु ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। है फसलों की कटाई सामान्यतः गर्मी के मौसम में अप्रैल और मई के दौरान होती है।

मुख्य रबी फसलें

- **अनाज:** गेहूँ, जौ, जई
- **दालें:** चना, मटर, मसूर
- **तिलहन:** अलसी, सरसों, सूरजमुखी
- **अन्य:** आलू, राई, बरसीम

रबी सीजन की प्रमुख सब्जी फसलों में टमाटर, बैगन, भिन्डी, आलू, तोरई, लौकी, करेला, सेम, बण्डा, फूलगोभी, पत्ता-गोभी, गाठ-गोभी, मूली, गाजर, शलजम, मटर, चुकंदर, पालक, मेंथी, प्याज, आलू, शकरकंद आदि सब्जियां उगाई जाती हैं।

फसलें	सामान्य रबी क्षेत्र	बोया गया क्षेत्र (2023-24)	बोया गया क्षेत्र (2024-25)
गेहूं	312-35	315-63	320-00
चावल	42-02	21-53	21-53
दालें	140-44	139-11	139-11
मसूर	15-13	17-76	17-76
मटर	6-50	8-98	8-98
सरसों	79-16	93-73	93-73

रबी फसलों की पैदावार में कमी

रबी फसलों की पैदावार में कमी के मुख्य कारण असंतुलित उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार, कीट-रोग, पाला व शीतलहर, अनियमित वर्षा और मिट्टी में पोषक तत्वों व जीवांश पदार्थ की कमी हैं। इन समस्याओं के कारण पौधों की वृद्धि बाधित होती है, फसलें खराब होती हैं और अंततः उपज घट जाती है।

मौसम संबंधी कारण

पाला और शीतलहर: कड़ाके की ठंड से पौधों की कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, जिससे पत्तियाँ, फूल और फल मुरझा जाते हैं और उत्पादन प्रभावित होता है।

अनियमित वर्षा: रबी फसलों के लिए सिंचाई का पानी महत्वपूर्ण है। अनियमित वर्षा या जलभराव से फसल का विकास रुक जाता है और पैदावार कम हो जाती है।

मृदा संबंधी कारण

असंतुलित उर्वरक: असंतुलित या अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने से मिट्टी की उर्वरक क्षमता घट जाती है और मिट्टी में जीवांश पदार्थ व सूक्ष्मजीवों की कमी हो जाती है।

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 09 दिसम्बर, 2025

मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी: सही मात्रा में पोषक तत्वों की कमी से पौधों का विकास अवरुद्ध हो जाता है, जिससे पीली पत्तियाँ और कम उपज मिलती है।

खरपतवार: खरपतवार फसलों के साथ पानी, धूप और पोषक तत्वों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे रबी फसलों की पैदावार कम होती है।

कीट और रोग: फंगल, बैक्टीरियल और वायरल रोग पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है और उपज घट जाती है।

जुताई का अभाव: खरीफ फसल के बाद मिट्टी को ठीक से न जोतने से मिट्टी की संरचना और वायु संचार में कमी आती है, जो जड़ों के विकास के लिए हानिकारक है।

सिंचाई की कमी: पर्याप्त सिंचाई न मिलने से रबी फसलों का विकास ठीक से नहीं हो पाता और पैदावार प्रभावित होती है।

रबी फसलों की पैदावार में बढ़ोतरी

हमारे देश में रबी सीजन की शुरुआत हो चुकी हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में किसानों ने रबी की प्रमुख फसलों की बुवाई शुरू कर दी हैं। वर्तमान समय में खेती तकनीक और मशीनों पर आधारित हो गई है। ऐसे में सही तरीके से खेती करने के लिए किसान के पास रबी सीजन की कृषि से संबंधित सही जानकारी होना बहुत ही आवश्यक है। यदि उन्हें मौसम और नई तकनीकों की सही जानकारी नहीं रहेगी तो फसलों के उत्पादन पर भी इसका असर पड़ सकता है।

रबी फसलों की खेती की तैयारी के बाद सबसे महत्वपूर्ण काम है मृदा का स्वास्थ्य परिक्षण एवं उर्वरक का प्रबंधन। मृदा का स्वास्थ्य परिक्षण करने के लिए सबसे आवश्क है।

बीज और बुवाई

सही बीज चुनें: अच्छी उपज के लिए हमेशा साफ, स्वस्थ, रोगमुक्त और प्रमाणित बीजों का उपयोग करें. अपनी मिट्टी और फसल के अनुकूल बीज का चुनाव करने के लिए निकटतम कृषि कार्यालय से सलाह लें।

संतुलित पोषण दें: मिट्टी की जांच के आधार पर फास्फोरस, पोटाश और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करें. डीएपी पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय एसएसपी और यूरिया जैसे एनपीके ग्रेड उर्वरकों का उपयोग करें ताकि नाइट्रोजन, फास्फोरस और सल्फर का संतुलित मात्रा में पोषण मिल सके।

उर्वरक और खाद

समय पर उर्वरक दें: उर्वरकों को फसल के प्रकार और पोषक तत्वों की आवश्यकता के अनुसार उचित समय पर प्रयोग करें. दलहनी फसलों में नाइट्रोजन की पूरी मात्रा बुवाई के समय ही फास्फोरस और पोटाश के साथ देना चाहिए।

बीज उपचार करें: बुवाई से पहले बीजों को जैव उर्वरक (bio-fertilizers) से उपचारित करें. दलहनी फसलों में ऐसा करने से जड़ों में गांठें बनती हैं, जिनसे वायुमंडलीय नाइट्रोजन जमीन में समाहित होती है और भूमि की उर्वरता बढ़ती है।

और पोटाश के साथ देना चाहिए।

सिंचाई और खरपतवार प्रबंधन

सही समय पर सिंचाई करें: रबी फसलों को उचित नमी की आवश्यकता होती है. मौसम और फसल की अवस्था के अनुसार सही समय पर सिंचाई करें।

खरपतवार नियंत्रण करें: बुवाई के 25-30 दिन बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई करें।

अन्य महत्वपूर्ण उपाय

मिट्टी की जांच कराएं: मिट्टी की जांच के बाद ही उर्वरक और अन्य पोषक तत्वों का प्रयोग करें, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और फसल का विकास बेहतर हो.

कृषि विशेषज्ञों से सलाह लें: स्थानीय कृषि विभाग के कार्यालयों से संपर्क करके अपनी फसल और मिट्टी के अनुकूल बीज, उर्वरक और प्रबंधन की जानकारी लें।

निष्कर्ष

रबी की फसल भारतीय कृषि का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सही समय पर बुवाई, सिंचाई, और फसल संरक्षण से इन फसलों की पैदावार में वृद्धि हो सकती है। सरकार की विभिन्न योजनाएं और सब्सिडी किसानों की मदद करती हैं और उनकी आय को स्थिर रखती हैं। रबी की फसलें न केवल देश की खाद्यान्न सुरक्षा को सुनिश्चित करती हैं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक स्थिरता भी लाती हैं। रबी फसलों की खेती में आने वाली चुनौतियों का सही समाधान ढूंढकर भारतीय कृषि को और भी मजबूत बनाया जा सकता है।